दिनांक :- 22-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम

स्नातक :- द्वितीय वर्ष कला

विषय :- इतिहास प्रतिष्ठा

पत्र :- चतुर्थ

इकाई :- दो

अध्याय :- अफीम युद्ध (1839-1856)

उसी प्रकार यदि किसी अमरीकी नागरिक पर फौजदारी का कोई अभियोग हो तो उसका निर्णय अमरीकी अदालत में अमरीकी कानून के अनुसार किया जाए। पहले तो फौजदारी मामले ही थे, बाद में दीवानी मामले भी आ गए। ये शर्तें संधि के चौबीसवें और पच्चीसवें अनुच्छेद थे। इन दोनों अनुच्छेदों ने चीन की संप्रभुता, सीमा-शुल्क की क्षति तथा न्यायिक स्वायत्तता पर प्रहार किया। ये अनुच्छेद काफी महत्वपूर्ण थे। इनके द्वारा अमरीका ने राज्य क्षेत्रातीत का अधिकार प्राप्त किया।

Scanned with CamScanner

अमरीका की तरह फ्रांस ने भी चीन के साथ संधि करने का प्रयास किया। फ्रांस-चीन संधि (अक्टूबर, 1844) भी ब्रिटिश और अमरीकी नमूने पर ही हुई। इसके द्वारा फ्रांस को वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गई जो ब्रिटेन और अमरीका को प्राप्त थी। नवीनता इसमें इतनी ही थी कि फ्रांस ने कैथोलिक धर्म-प्रचारकों के लिए भी चीन का दरवाजा खोल दिया। चीन के पाँच बन्दरगाहों में उसे चर्च बनाने की अनुमति मिल गई। चीनी सम्राट ने कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई। फ्रांस के बाद 1845 में नार्वे तथा स्वीडन के साथ और फुलाई, 1845 में बेल्जियम के साथ चीन को ऐसी ही संधियाँ करनी पड़ी। 1845 में पुर्तगालियों ने मकाओ को खुला बन्दरगाह घोषित कर दिया। 1886 में चीन ने इसे स्वायत्तता दे दी और 1887 में इस पर पुर्तगालियों का अधिकार मान लिया। चीन का द्वार सभी विदेशियों के लिए खुल गया।

(4) साम्राज्यवाद (Imperialism) - प्रथम अफीम युद्ध के फल स्वरूप चीनी पश्चिमी साम्राज्यवादी देशों का शिकार बन गया। ब्रिटेन, अमरीका, फ्रांस, बेल्जियम, पोर्तुगाल आदि।

सभी पश्चिमी साम्राज्यवादी देश चीन में अपना साम्राज्यवादी जाल फैलाने लगे। चीन का आर्थिक शोषण शुरू हुआ। चीन का द्वार साम्राज्यवादी देशों के व्यापारियों के लिए खुल गया। चीन की एकांतता दूर हो गई। उसका, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक शोषण शुरू हो गया।

(5) राजनीतिक परिणाम (Political Results) - प्रथम अफीम युद्ध के राजनीतिक परिणाम बड़े सुदूरगामी सिद्ध हुए। वस्तुतः इसने चीन के राजनीतिक इतिहास के एक नवीन अध्याय जोड़ दिया। यह अध्याय पश्चिमी साम्राज्यवाद का था। ब्रिटेन में नानकिंग और बोग की संधियाँ, अमरीका में वांघीय-संधि, फ्रांस ने ह्वायम पोआ की संधि तथा अन्य देशों ने चीन से संधियाँ करके

चीन में अपना प्रभाव क्षेत्र कायम किया। इन संधियों के फलस्वरूप उन्हें व्यापारिक, सुविधाएँ, राज्यक्षेत्रातीत अधिकार तथा धर्म प्रचार करने की सुविधाएँ प्राप्त हो गई। चीन की संप्रभुता पर आँच आई। चीनी सम्राट का स्वर्गिक साम्राज्य 'बर्बर जातियों का अड्डा बन गया। यहाँ पर स्मरण रखना चाहिए कि चीन एक देश के द्वारा विजित अथवा कोई औपनिवेशिक राज्य नहीं था। वस्तुतः यह सभी राज्यों के लिए अंतर्राष्ट्रीय राज्य के रूप में था। इन राज्यों के व्यापारिक जहाज बन्दूकवाले नाविकों के साथ चीन आने लगे।

चीन का राजनीतिक इतिहास पश्चिम साम्राज्यवाद का इतिहास बन गया।

इस प्रकार प्रथम अफीम युद्ध आधुनिक चीनी इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय था। वस्तुतः इसकी कथावस्तु केन्द्र में ईस्ट इंडिया कंपनी के अफीम व्यापार से आरंभ होती है चीन का स्वर्गिक साम्राज्यवाद इन विदेशी व्यापारियों

Scanned with CamScanner

को बर्बर समझता था तथा सम्राट अहंकारयुक्त श्रेष्ठता की प्रथा को अक्षुण्ण रखना चाहता था। वह विदेशियों के साथ समानता का व्यवहार भी नहीं मानता था। यह सब तो ठीक था। किंतु चीनी सम्राट चीन में अफीम के व्यापार को बंद करने का नैतिक दायित्व पुरा नहीं कर सका। अफीम व्यापार को बन्द करने के लिए जो नाटक खेला गया, वह तो ठीक था किंतु चीन के लिए यह दुःखान्त साबित हुआ। इससे चीन की संप्रभुता पर आँच आई। विदेशियों को साम्राज्यवादी जाल फैलाने का अवसर प्राप्त हो गया। चीन एक अंतर्राष्ट्रीय उपनिवेश बन गया। मंचू राजवंश की कमजोरी स्पष्ट हो गई। चीन में मातम छा गया। राष्ट्रीय अपमान के कारण लोगों में हीन मनोवृत्ति उत्पन्न हुई। यह एक जबर्दस्त मनोवैज्ञानिक परिणाम था। लोगों ने महसूस किया कि मंचू राजवंश उनकी रक्षा करने में असमर्थ है। इसी भावना ने

चीन में अनेक उपद्रवी गुप्त समितियों तथा 1911 की चीनी क्रांति को जन्म दिया। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अफीम व्यापार तो एक बहाना था। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के लिए चीन एक उपयुक्त क्षेत्र था, जबइसने आनाकानी की तो इसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद युद्धपोतों का शिकार होना पड़ा।

द्वितीय अफीम युद्ध (1856)

19वीं शताब्दी के मध्य में चीन ने इंगलैंड, अमरीका एवं फ्रांस से संधियाँ की इनका बड़ा महत्व था। उनके द्वारा एक ओर तो पश्चिमी देशों के लिए चीन का दरवाजा खुल गया तथा दूसरी ओर पश्चिमी देश चीन से अपना साम्राज्य-विस्तार चाहने लगे। चीन एक पिछड़ा देश था। पश्चिमी देशों ने उसका शोषण शुरू कर दिया। अनेक धर्म-प्रचारक चीनियों को ईसाई बनाने लगे। वे कन्फ्यूशियस और लाओत्से के धार्मिक उपदेशों की आलोचना करने लगे।

इससे चीनियों तथा विदेशियों के बीच कटुता की भावना उत्पन्न हुई। कैंटन, हांग-कांग आदि बंदरगाहों पर विदेशी व्यापारिक संस्थानों के साथ ही विदेशी बस्तियाँ भी विकसित हुई। अपनी सुरक्षा के लिए वे अपने देश की सेना रखते थे तथा अपने देशवासियों पर शासन भी स्वयं करते थे। इससे चीन की संप्रभुता और स्वतंत्रता खतरे में पड़ गई। अतः 1842 की नानकिंग की संधि के पश्चात भी कैंटन में विदेशी व्यापारियों और चीनीओं के बीच अनेक बार संघर्ष हुए। कैंटन में वायसराय ने शांति-व्यवस्था बनाए रखने के लिए विदेशी व्यापारियों का नगर में प्रवेश निषिद्ध कर दिया। ऐसी स्थिति में द्वितीय अफीम युद्ध अवश्यम्भावी हो गया। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे।

(1) सीमा-शुल्क व्यवस्था (Arrangement of Tariff) - 1842 की नानकिंग संधि के अनुसार चीन में आयात-निर्यात के सीमा शुल्क की दरें निश्चित कर दी गई थी